भू मि का

मैं देहात में रहनेवाला हूँ। अत: वहाँ के अभाव तथा स्थित समस्याओं को अनुभव कर चुका हूँ। जब एम. फिल. की उपाधि के हेतु लघु शोध प्रबंध के लिए विषय चुनने की बात आयी तो मेरा ध्यान देहात की समस्याओं में अटक गया। अत: मैं सोचने लगा, अचानक मुझे नागार्जुन के "रतिनाथ की चाची" इस उपन्यास की याद आयी जो मैं ने एम.ए. का अध्ययन करते समय पढ लिया था जिसका परिणाम मेरे मन पर काफी अर्से तक रह चुका था। अत: मैं नागार्जुन के अन्य उपन्यासों को भी पढना आरंभ किया। कुछ अन्य उपन्यास पढने के बाद मुझे मालूम हुआ कि नागार्जुन हिंदी साहित्य में एक प्रतिभा संपन्न और युगचेतना के प्रति सजग उपन्यासकार है। हिंदी आँचलिक उपन्यासों की परंपरा में नागार्जुन का अद्वितीय योगदान रहा हैं। वे रूस की सामाजिक एवं आर्थिक विचारधारा से प्रभावित रहे हैं। इसका प्रति-फलन उनके उपन्यासों में भी हुआ है। सामाजिक परिवर्तन, नारीकी विविध समस्याएँ, वर्ग संघर्ष, शोषितों के विद्रोह आदि को उन्होंने अपने उपन्यासो में वर्ण्य विषय बनाया है। अत: मैंने यह तय किया कि क्यों न मैं "उनके आँचलिक उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ " इस विषय को ले। यह विचार आते ही मैंने अपने निर्देशक के साथ चर्चाकी तब वे भी राजी हो गए और मैंने इस विषय को तय करके कार्य प्रारंभ किया।

इस लघु शोध प्रबंध में नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित मिथिला जनपद में प्रचलित विवाह की कुप्रथाएँ, नारी जीवन की समस्याएँ तथा ग्राम जीवन की आर्थिक और सामाजिक एवं धार्मिक समस्याओं का विविध अंतरंगों के साथ उद्घाटित करनेका उद्देश्य रहा है।

नागार्जुन की औपन्यासिक विशिष्टताओं को ध्यान में, रखते हुए उपसंहार के अतिरिक्त इस लघु शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है।

पहले अध्याय में नागार्जुन के जीवन वृतान्त पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है। इसमें उनकी प्रामाणिक जीवनी एवं व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हुए उनके कृतित्व को प्रस्तुत किया है।

दूसरे अध्याय में नागार्जुन की युगीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थिति-यों का संदर्भगत अध्ययन प्रस्तुत किया है। वस्तुत: ये युगीन संदर्भ उनके उपन्यासों के प्रेरक तत्व रहे हैं।

तीसरे अध्याय में उनके उपन्यासो में चित्रित विवाह विषयक प्राप्य अनमेल विवाह समस्या, बहु विवाह समस्या, जरठ विवाह समस्या तथा विधवा विवाह समस्या का विचार किया है।

चौथे अध्याय में नारी जीवन से संबंधित प्राप्य विधवा समस्या, वेश्या समस्या, विवाह की कुप्रथाएँ, बलात्कार, अत्याचार और नारी शिक्षा समस्या का विश्लेषण किया है।

पाँचवे अध्याय में ग्रामजीवन से संबंधित आर्थिक समस्या, छुआछूत समस्या, पारंपारिक अंधविश्वास, रीतिरीवाज, अंधश्रध्दा, जमींदारों की शोषण प्रवृति और आत्याचार आदि समस्याओंपर प्रकाश डाला है।

इस लघु शोध प्रबंध के अंतमें उपसंहार के अंतर्गत संपूर्ण अध्ययन के निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है।

यह लघु शोध प्रबंध मेरे गुरुवर्य श्रध्देय प्राचार्य डॉ. बी.बी.पाटीलजी के आत्मीय एवं प्रेरक निरीक्षण और निर्देशन का प्रतिफलन है। उनका प्राप्त स्नेह और मार्गदर्शन अगर समयपर न मिलता तो मेरे लिए यह कार्य

असंभव था। अत: मैं उनका बहुत ऋणी हूँ लेकिन उनके ऋण से मैं उऋण होना नहीं चाहता, केवल उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ।

इस लेखन कार्य के लिए मेरे श्रध्दास्थान श्रध्देय जे. बी. पाटील [कार्यकारी संचालक, सांगली जिल्हा सह. बैंक] और उनकी सहधर्मचारिणी और मेरी गुरुमाता श्रध्देय सौ. मायादेवी पाटील [प्राचार्य, कला-वाणिज्य महाविद्यालय, कुरुंदवाड] जीने अपनी ममतामयी मधुरवाणीसे सदैव प्रोत्साहित किया है। इसलिए इनके प्रति मैं अत्यंत ऋणी हूँ।

इनके अतिरिक्त मेरे स्नेही प्रा. डॉ. वाय्. बी. धुमाल [कराड] और मेरे सहयोगी मित्र प्रा. एम्. एम्. मुलाणी इस कार्य में समय-समय पर सहायता देते रहे, अत: मैं इनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

श्रीयुत बी. एस. वाघमारे [ग्रंथपाल-पी. व्ही. पी. महाविद्यालय, कवठेमहांकाल] और सौ. एल्. जे. भद्रे [ग्रंथपाल - महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर] इन्होंने मुझे समय-समय पर ग्रंथ देकर सहायता की हैं, अत: मैं उनके प्रतिभी आभारी हूँ।

यह लघु शोध प्रबंध अत्यंत अल्प समय में शीघ्रता से टंकलिखित करने का का कार्य महालक्ष्मी टाईप-रायटिंग इन्स्टिटयूट, कोल्हापुर ने किया है, इसलिए मैं इस संस्था के टायपिस्ट श्री. पी. जी. कोरडे और शोत-सेवकों का भी आभारी हूँ।

अंत में उन सभी ग्रंथ लेखकों एवं स्नेही मित्रों को कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे जाने-अनजाने सहयोग देकर इस लघुशोध प्रबंध को पूर्ण करने मे सहायता दी है। मैं इस कृति में होनेवाले कमियों को स्वीकार करते हुए यह लघुशोध प्रबंध आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर.
दि. २९-११-१९८९

प्रा. दि. मा. भस्मे.
शोधछात्र.